

॥ रामाष्टकम् ॥

भजे विशेषसुन्दरं समस्तपापखण्डनम् । स्वभक्तचित्तरञ्जनं सदैव राममद्वयम् ॥ १ ॥

जटाकलापशोभितं समस्तपापनाशकम् । स्वभक्ततीतिभञ्जनं भजे ह राममद्वयम् ॥ २ ॥

निजस्वरूपबोधकं कृपाकरं भवापहम् । समं शिवं निरञ्जनं भजे ह राममद्वयम् ॥ ३ ॥

सहस्रपङ्ककल्लितं ह्यनामरूपवासुवम् । निराकृतिं निरामयं भजे ह राममद्वयम् ॥ ४ ॥

निष्प्रपङ्कनिर्विकल्लनिर्मलं निरामयम् ॥ चिदेकरूपसन्ततं भजे ह राममद्वयम् ॥ ५ ॥

भवान्निपोतरूपकं ह्यशेषदेहकल्लितम् । गुणाकरं कृपाकरं भजे ह राममद्वयम् ॥ ६ ॥

महावाक्यबोधकैर्विराजमानवाक्यपदैः । परब्रह्म व्यापकं भजे ह राममद्वयम् ॥ ७ ॥

शिवप्रदं सुखप्रदं भवच्छिदं द्रमापहम् । विराजमानदैशिकं भजे ह राममद्वयम् ॥ ८ ॥

रामाष्टकं पठति यः सुकरं सुपुण्यं व्यासेन भाषितमिदं शृणुते मनुष्यः ।

विद्यां श्रियं विपुलसौख्यमनन्तकीर्तिं सम्प्राप्य देहविलये लभते च मोक्षम् ॥ ९ ॥

॥ इति श्रीव्यासविरचितं रामाष्टकं सम्पूर्णम् ॥